© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 प्रमोद कुमार मिश्र
शोध–निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
इलाहाबाद, (उ0प्र0)
मीनू पाण्डेय
शोधछात्रा, नेट (शिक्षाशास्त्र),
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
इलाहाबाद, (उ0प्र0)

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन का विषय उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन है। अध्ययन में लिंग के आधार पर उद्देश्यों का निर्माण कर अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधानकर्त्री ने अध्ययन प्रक्रिया को एक्स–पोस्ट–फैक्टो अनुसंधान विधि से सम्पन्न किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयागराज जनपद में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रयागराज मण्डल में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के 300 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर को मापने के लिए सुनील कुमार उपाध्याय एवं अल्का सक्सेना द्वारा निर्मित 'उपाध्याय– सक्सेना सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स स्केल' का प्रयोग किया गया है। विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का मापन के लिए डॉ0 बी0के0 पासी द्वारा निर्मित 'पासी टेस्ट ऑफ क्रियेटिविटी' का प्रयोग किया गया है। जिसका निर्माण हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों वर्जन का उद्देश्य स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मापन करना है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एनोवा (एफ–अनुपात) सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषणोपरान्त पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के कुल विद्यार्थियों एवं छात्रों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव पाया गया जबकि छात्राओं के सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं पाया गया। जिसका कारण यह हो सकता है कि आज भी बालिकाओं को परिवार, विद्यालय, समाज एवं अन्य जगहों पर रोका– टोका जाता है वहीं उन्हें बहुत कम अभिप्रेरित किया जाता है तथा उन्हें आगे बढ़ाने में लोगों की सोच आज भी पीछे हैं।

की–वर्ड– उच्च माध्यमिक स्तर, अंग्रेजी माध्यम, सृजनात्मकता, सामाजिक–आर्थिक स्तर

प्रस्तावना– डॉ0 कलाम के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का भौतिक और आध्यात्मिक विकास करना है। इसके साथ ही साथ हमें शिक्षा द्वारा योग्य नागरिकों का निर्माण करना है जो समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकें। **डॉ0 कलाम** के शब्दों में, हमारी शिक्षा व्यवस्था कुछ ऐसी हो जिससे व्यक्ति विशेष में रचनाशीलता, नवीनता, नैतिकता तथा उद्यमशीलता के कौशलों का विकास हो सकें।

IJSRST18455124 | Received : 01 April 2018 | Accepted : 20 April 2018 | March-April-2018 [(4)7 | 929-939]

आधुनिक समय में शिक्षा का उद्देश्य सीमित एवं एकांगी हो गया है, जिसमें शिक्षा को विद्यार्थियों में कतिपय व्यावसायिक कुशलता का विकास करके उसे धनार्जन के योग्य बनाने की प्रक्रिया समझ लिया गया है।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुआ है। गुरुकुल के रूप में स्थित शिक्षण संस्थाएँ, विश्वविद्यालयों तथा अन्य विभिन्न संस्थाओं में परिणत हो गयी है। पाठ्यक्रम भी धर्म, दर्शन, तर्क, व्याकरणादि की अपेक्षा वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक विषयों पर आश्रित हो गया है। विद्यार्थियों को पुस्तकों अथवा संगणक इत्यादि तकनीकि–उपकरणों से ज्ञान प्रदान किया जा रहा है। इस शिक्षण विधि से भावनाओं से रहित सूचनापरक ज्ञान विद्यार्थियों के मस्तिष्क में संग्रहीत होता है, तत्पश्चात् परीक्षा में वही सूचनाएँ उत्तर–पुस्तिका में अंकित होकर विद्यार्थी के मूल्यांकन का आधार बनती है।

मनुष्य एक बुद्धिजीवी एवं सामाजिक प्राणी है। बुद्धि की सहायता से मानव अपनी परिस्थितियों से समायोजन बनाये रखता है। मनुष्य समाज में रहकर अन्तर्सम्बन्धों के माध्यम से नित नई वस्तुओं को देखकर सदैव वह अपने व्यवहार में परिवर्तन करके वह अपनी सृजनात्मक शक्तियों का विकास करता है। शिक्षा के द्वारा ही सृजनात्मक शक्तियों का विकास होता है। किसी देश का बहुमुखी विकास सृजनशील शक्तियों पर निर्भर करता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र विज्ञान, कला, साहित्य, संगीत एवं राजनीति में सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है। सृजनात्मकता पर नवीन आविष्कार करने व जीवन की जटिल समस्याओं को सुझलाने में सहायक होती है।

प्रत्येक बच्चे में जितनी भी योग्यतायें हैं, उसके विकास के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाएं, क्योंकि हमारे देश के संविधान में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं, रूचियों व सामर्थ्य के पूर्ण विकास का अधिकार है।

आज का युग वैज्ञानिक उन्नति का युग है, यह उन्नति मनुष्यों के शताब्दियों के सतत् प्रयत्न का परिणाम है। वैज्ञानिकों के क्रियाशील एवं विश्लेषणात्मक चिन्तन मस्तिष्क ने अनेक प्रकार के आविष्कार किए हैं। कार्य करने की नवीन–नवीन विधियां बताई हैं जिसमें आज अमेरिका एवं रूस ने मनुष्यों को (अपोलो एवं ल्यूना) चांद पर पहुँचा कर आश्चर्य चकित कर दिया है। वैज्ञानिक अनुसंधानों ने आज ऐसे यातायात के साधनों का निर्माण किया है जिससे आज दुनिया बहुत छोटी हो गई है। औद्योगिक मशीनों के आविष्कार से उत्पादन की मात्रा एवं उसके गुणों में काफी वृद्धि हुई है। यह सब सृजनात्मक योग्यता का ही परिणाम है। कला के क्षेत्र में भी अनेक कवियों व लेखकों की रचनाएं पढ़ने को मिलती हैं, तो हमें मंत्र मुग्ध कर देती है। मानवीय साधन से तात्पर्य उन रचनाशील व कल्पनाशील व्यक्तियों से है जो नित नई खोजें करते रहते हैं तथा प्राकृतिक साधनों के उत्तम उपयोग की ओर प्रेरित रहते हैं। इस प्रकार मानवीय साधन के बिना प्राकृतिक साधन व्यर्थ ही प्रमाणित होंगे। अतः यह आवश्यक है कि मानवीय साधनों को अधिक सक्षम बनाया जाए तथा उनकी रचनात्मक शक्ति को विकसित करने के लिए अधिक सुविधायें प्रदान की जाएं, यद्यपि हमारे देश में प्राकृतिक साधन की कोई कमी नहीं है, परन्तु हम फिर भी आर्थिक रूप से कमजोर हैं तथा दूसरे देशों देशों में ऋणी हैं, इसका कारण है कि हम देश के प्रतिभा सम्पन्न बच्चों को प्रारम्भ से ही पहचान कर उचित प्रशिक्षण देने में असमर्थ हैं।

वर्तमान युग प्रतियोगिता का युग है, इस युग में ऐसे प्रतियोगितात्मक मस्तिष्कों अर्थात् सृजनशील व्यक्तियों की आवश्यकता है जो कि वर्तमान ज्ञान और तकनीकी उन्नति पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकें। यह कार्य तभी हो सकता है जबकि सृजनशील व्यक्तियों को प्रोत्साहित किया जाए।

सृजनात्मक में विद्यालयी उपलब्धि की संभावनायें सदैव ढूँढना निराशाजनक भी हो सकता है। सामान्यतः एक सृजनशील मस्तिष्क को विद्यालयी पाठ्यक्रम की संरचित पूर्व नियोजित, तथा अभिमुख केन्द्रित परिस्थितियों में अधिक रूचि नहीं होने की ही आशंकाएँ रह सकती हैं।

यह तथ्य वास्तव में आज के अध्यापकों को यह चुनौती प्रदान करता है कि वे पाठ्यचर्या को रूढ़िवादित एवं एकरूपता की नीरसता से मुक्त करके उसे सृजनात्मकता के बहुमुखी रसों से प्लावित करें, सृजनात्मकता को विविध रंगों से अभिभूषित करें, शिक्षा के निर्जीव ढाँचे में सृजनात्मकता के प्राण फूंक दें तभी वे प्रत्येक विद्यार्थी में, किसी न किसी अंश में निहित सृजनात्मकता को विकास के अवसर प्रदान कर सकेंगे, तभी प्रत्येक छात्र को वैयक्तिक रूप से तुष्टिपूर्ण तथा सामाजिक रूप से प्रभावक जीवन के लिए तैयार कर सकेंगे।

उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए यह कहा जा सकता है कि सृजनात्मकता व्यक्ति के व्यक्तित्व का उच्चतम विकास है तथा देश की समाज की, शिक्षा की व व्यक्तिगत उन्नति व नवीनतम समस्याओं के नवीन हल प्राप्त करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

समस्या कथन–

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं है।

शोध–प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधानकर्त्री ने अध्ययन प्रक्रिया को एक्स–पोस्ट–फैक्टो अनुसंधान विधि से सम्पन्न किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयागराज जनपद में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रयागराज मण्डल में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के 300 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर को मापने के लिए सुनील कुमार उपाध्याय एवं अल्का सक्सेना द्वारा निर्मित 'उपाध्याय– सक्सेना सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स स्केल' का प्रयोग किया गया है। विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का मापन के लिए डॉ0 बी0के0 पासी द्वारा निर्मित 'पासी टेस्ट ऑफ क्रियेटिविटी' का प्रयोग किया गया है। जिसका निर्माण हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों वर्जन का उद्देश्य स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मापन करना है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एनोवा (एफ–अनुपात) सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. **उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।**

H_1 **उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर है।**

H_{01} **उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर नहीं है।**

सारणी सं0 – 1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक– आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर को दर्शाते हुए प्रसरण मान (एफ–अनुपात)

स्रोत	स्वतन्त्रांश (df)	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F-Ratio)	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	2166.71	1083.36	16.30*	F.01(2,297)=4.71
समूहों के अन्दर	297	19807.57	66.47		
कुल	**299**	**21974.28**	**1149.83**		

*.01 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 से दृष्टव्य होता है कि एफ–अनुपात का मान 16.30 हैं, जो .01 सार्थकता स्तर पर df =2, 297 पर सारणी मान 4.71 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। सार्थक एफ अनुपात के आधार कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर सामाजिक–आर्थिक,

मध्यवर्ती सामाजिक–आर्थिक एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विभिन्नता है।

सारणी सं0 – 1.1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक– आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–मान

क्र. सं.	स्तर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थक / असार्थक
1.	उच्च	73	51.82	1.17	5.68	4.87	सार्थक
	मध्यम	148	46.14				
2.	उच्च	73	51.82	1.32	6.99	5.28	सार्थक
	निम्न	79	44.84				
3.	मध्यम	148	46.14	1.14	1.31	1.15	असार्थक
	निम्न	79	44.84				

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए निगमित टी–मान क्रमशः 4.87, 5.28 एवं 1.15 है। समूह तुलना से यह प्रतीत होता हैं कि उच्चतर सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से अधिक है। जबकि मध्यवर्ती सामाजिक–आर्थिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से समानता है। अतः उच्चतर सामाजिक–आर्थिक, मध्यवर्ती सामाजिक–आर्थिक एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् तीनों में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्षतः उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् सामाजिक–आर्थिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है।

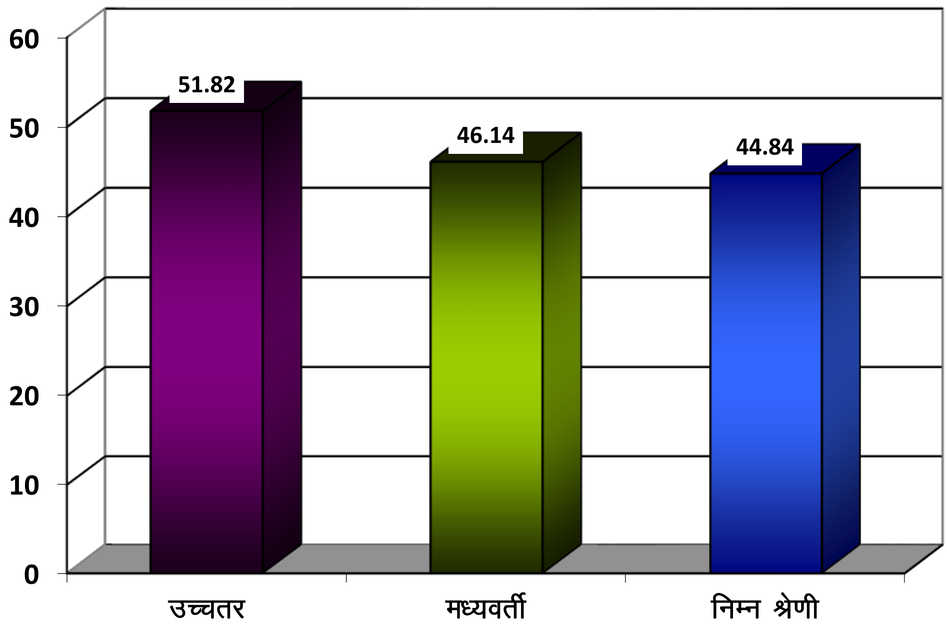

आरेखीय प्रदर्शन–1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमान

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।

H_2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता में अन्तर है।

H_{02} उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता में अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 – 2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता में अन्तर को दर्शाते हुए प्रसरण मान (एफ–अनुपात)

स्रोत	स्वतन्त्रांश (df)	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F-Ratio)	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	864.22	432.11	10.62*	F.01(2,147)=4.75
समूहों के अन्दर	147	6021.28	40.68		
कुल	**149**	**6885.5**	**472.79**		

*.01 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 2 से दृष्टव्य होता है कि एफ–अनुपात का मान 10.62 हैं, जो .01 सार्थकता स्तर पर df =2, 147 पर सारणी मान 4.75 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। सार्थक एफ अनुपात के आधार कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर सामाजिक–आर्थिक, मध्यवर्ती सामाजिक–आर्थिक एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता में विभिन्नता है।

सारणी सं0 – 2.1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक– आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता के मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–मान

क्र. सं.	स्तर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थक / असार्थक
1.	उच्च	36	54.86	1.29	4.01	3.10	**सार्थक**
	मध्यम	75	50.85				
2.	उच्च	36	54.86	1.47	6.76	4.58	**सार्थक**
	निम्न	39	48.10				
3.	मध्यम	75	50.85	1.26	2.75	2.18	**असार्थक**
	निम्न	39	48.10				

सारणी संख्या 2.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए निगमित टी–मान क्रमशः 3.10, 4.58 एवं 2.18 है। समूह तुलना से यह प्रतीत होता हैं कि उच्चतर सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता से अधिक है। जबकि मध्यवर्ती सामाजिक– आर्थिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता से समानता है। अतः उच्चतर सामाजिक–आर्थिक, मध्यवर्ती सामाजिक–आर्थिक एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् तीनों में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्षतः उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् सामाजिक–आर्थिक स्तर का अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है।

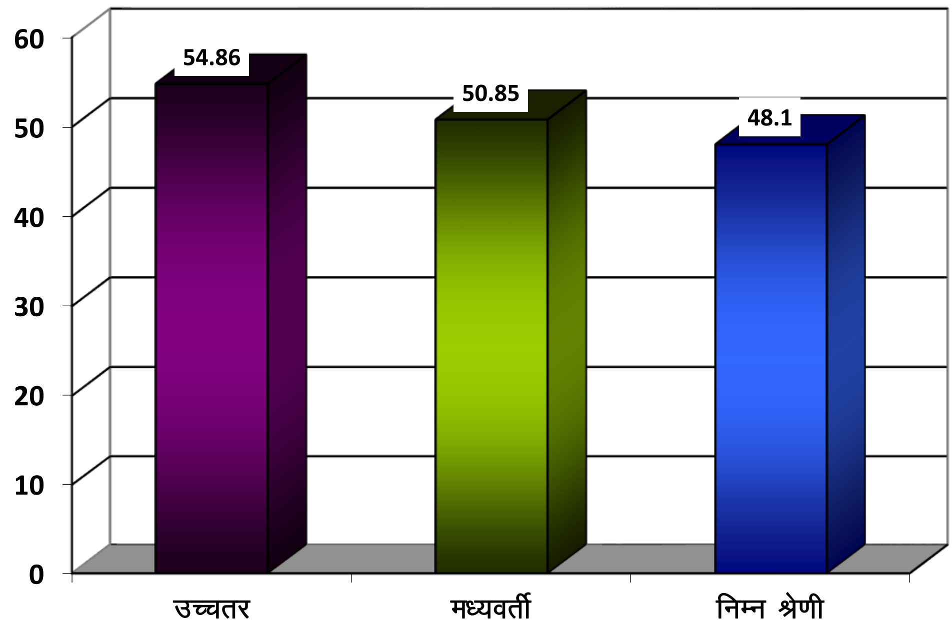

आरेखीय प्रदर्शन–2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता के मध्यमान

3. **उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।**

H_3 **उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की सृजनात्मकता में अन्तर है।**

H_{03} **उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की सृजनात्मकता में अन्तर नहीं है।**

सारणी सं0 – 3

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक– आर्थिक स्तर वाली अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की सृजनात्मकता में अन्तर को दर्शाते हुए प्रसरण मान (एफ–अनुपात)

स्रोत	स्वतन्त्रांश **(df)**	वर्ग योग **(SS)**	माध्य वर्ग योग **(MS)**	एफ–अनुपात **(F-Ratio)**	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	38.89	19.44	0.24	F.01(2,147)=4.75
समूहों के अन्दर	148	12299.01	82.54		
कुल	**150**	**12337.894**	**101.99**		

01 स्तर पर असार्थक

सारणी संख्या 3 से दृष्टव्य होता है कि एफ–अनुपात का मान 0.24 हैं, जो .01 सार्थकता स्तर पर df =2, 147 पर सारणी मान 4.75 से निम्नतम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। सार्थक एफ अनुपात के आधार कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर सामाजिक–आर्थिक, मध्यवर्ती सामाजिक–आर्थिक एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की सृजनात्मकता में समानता है।

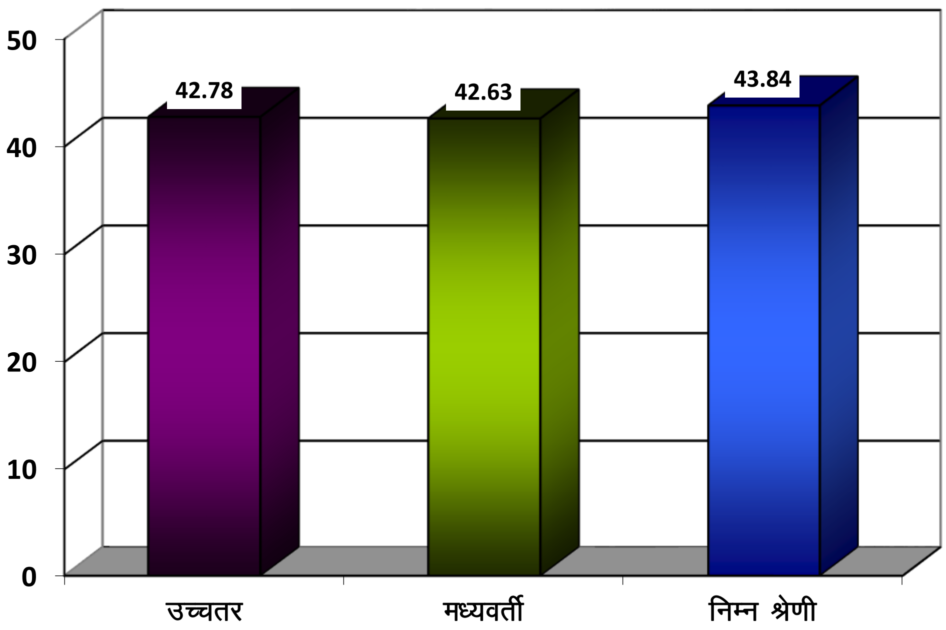

आरेखीय प्रदर्शन–3
उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की सृजनात्मकता के मध्यमान

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- उच्चतर सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से अधिक है। मध्यवर्ती सामाजिक–आर्थिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से समानता है।

  उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता पर उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव है।

- उच्चतर सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता से अधिक है। मध्यवर्ती सामाजिक–आर्थिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता से समानता है।

  उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के सृजनात्मकता पर उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव है।

- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर सामाजिक–आर्थिक, मध्यवर्ती सामाजिक–आर्थिक एवं निम्न श्रेणी के सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की सृजनात्मकता के सन्दर्भ में एक–दूसरे में समानता है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं है।

सुझाव–

व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक स्तर पर उनकी रुचियाँ, अभिरुचियाँ, कार्य कुशलता व सफलता आदि निर्भर करती है साथ ही साथ शैक्षिक कार्य उनके मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी होती है जिस पर इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। शैक्षिक कार्य एक नीरस एवं उबाऊ कार्य होता है विशेष रूप से किशोर विद्यार्थियों को तो यह और भी नीरस लगता है। अतः शैक्षिक कार्यों में इस अवधान की विशेष आवश्यकता होती है। सामाजिक–आर्थिक स्तर छात्र– छात्राओं के जीवन में अनेक समस्याओं को जन्म देती हैं जिससे उनकी शिक्षा अवरोधित होने लगती है और उनमें श्रेष्ठता नहीं आती है। इसका कारण वर्तमान में शिक्षा पूँजी प्रधान होता जा रहा है। जहाँ प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का अधिकार प्राविधान के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा दी जा रही है वहीं आज के समय में लोगों का निजी विद्यार्थियों में अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने हेतु अग्रसर होते जा रहे हैं और किसी तरह उच्च निजी विद्यालयों में अपने बच्चों का दाखिला करा भी देते हैं तो भी आये दिन बच्चों को किसी न किसी कार्य के पैसों की आवश्यकता होती है और आये दिन किसी न किसी प्रोजेक्ट पर कार्य करना होता है जिसके लिए उन्हें पैसों की आवश्यकता न पूर्ण होने उनमें तनाव बढ़ता है। आज वर्तमान में वैज्ञानिक युग होने के कारण शिक्षक भी आये दिन किसी न किसी प्रोजेक्ट पर कार्य प्रदान करते हैं जिससे उन्हें कम्प्यूटर, मोबाइल एवं संचार माध्यमों की आवश्यकता पड़ती ही है और यह सब चीज न मिल पाने पर उनमें शिक्षा के प्रति रुचि कम होने लगती है और उनकी सृजनात्मकता में गिरावट आने लगती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ऐनीज, जे0 (2001) साइटेड इन साल्वी, आर0 (2017) आदिवासी एवं गैरआदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन, *श्रृंखला एक शोधपरख वैचारिक पत्रिका,* वैल्यूम–5 (2)।
- गोनी एवं बेलो (2016). पैरेन्टल सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स, सेल्फ–कन्सेप्ट एण्ड जेण्डर डिफरेन्सेस ऑफ स्टूडेन्ट्स, ऐकेडमिक परफॉर्मेन्स इन ब्रोनो स्टेट कॉलेज ऑफ एजूकेशन : इम्पीलिकेशन्स फॉर काउन्सिलिंग, *जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड प्रैक्टिस (ऑनलाइन),* वाल्यूम–7, नं0 14।
- गरेड, ए0 (2017). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन, पी–एच0डी0 बियानी गर्ल्स बी0एड0 कालेज जयपुर, राजस्थान।
- चौहान, ए0के0एस0 एवं गुप्ता, एम0पी0 (2016). विभिन्न जाति वर्गों में यौन विभिन्नता के परिप्रेक्ष्य में चयनित मनोसामाजिक चरों की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन, ह्यूमिनिटीज एण्ड सोशल साइंसेज : इन्टरडिसिप्लीनरी एप्रोच, वैल्यूम 8 (01)।
- जमादार, चन्द्रकान्त एवं सिंधु, ए. (2015). द इम्पैक्ट ऑफ सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स ऑन एजुकेशनल इंटेलिजेन्स एण्ड क्रिएटिविटी एमंग ट्राइब एडोलसेन्स स्टूडेन्ट्स, *द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्डिया सॉइकोलॉजी,* वाल्यूम–3 (अक्टूबर–नवम्बर 2015), इश्शू–1, पृ0 112–124
- जरिंयल, जी0 एस0 (1983). क्रियेटिविटी, इंटेलीजेंस एंड एकेडेमिक अर्चाव मेंट एडं देयर रिलेशनशिप एंड डिफरेंस विद रेफरेंस टू सेक्स एडं एकेडेमिक सब्जेक्ट्स, *एजुकेशनल टिव्यू मंथली रिकार्ड फॉर इडिया,* मई– जून, 1983।
- जायसवाल, विजय (2007), ए स्टडी ऑफ साइंटिफिक क्रियेटीविटी एण्ड अचीवमेन्ट मोटिवेशन ऑफ ग्रेड टेन्थ स्टूडेन्ट्स ऑफ डिफरेन्ट एजुकेशनल बोर्ड्स ऑफ कानपुर सिटी, *जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन एण्ड रिसर्च,* नोएडा : राम–ईश इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, अंक–2 सं.–1, पृ. 40–45।